70वें स्वाधीनता दिवस पर निदेशक महोदय का संदेश

मेरे साथियों, भाइयों–बहनों व प्यारे बच्चों,

आज हम सब अपने निदेशालय के प्रांगण में अपने देश का स्वाधीनता दिवस मनाने के लिए एकत्रित हुए है। इस वर्ष के स्वाधीनता दिवस का विशेष महत्व है, क्योंकि हम अपनी स्वाधीनता के 69 वर्ष पूरे कर 70वें वर्ष में प्रवेश कर रहे है। इस शुभ अवसर पर मैं निदेशालय से संबंधित सभी सदस्यों एवं उनके परिवारों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। 69 वर्ष पूर्व आज के ही दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ था। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमारा जन्म एक आजाद देश में हुआ और हमने खुली हवा में सांस ली। 1947 से पहले कई शतकों तक हमारा देश पहले मुगलों के कब्जे में था फिर अग्रेंजो के अधीन रहा। स्वतंत्रता के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी गई, इस यज्ञ में कई लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी। उन्होंने अपना वर्तमान इसलिए न्यौछावर कर दिया ताकि भावी पीढ़ी के लोग एक अच्छी जिंदगी जी सकें। इसलिए आज हम सभी इन शहीदों को भी स्मरण करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पिछले 69 वर्षों में हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों मे उल्लेखनीय प्रगति की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में बड़ी समस्या अनाज उत्पादन की थी, एक भुखमरी की स्थिति थी। विदेशों से अनाज आयात कर देशवासियों का पेट भरना पड़ता था। हालांकि उस समय देश की जनसंख्या आज की जनसंख्या के मुकाबले लगभग एक तिहाई थी, फिर भी हम उनका पेट भरने में अक्षम थे। इसलिए उस समय के राजनेताओं ने एक मुख्य शुरूआत की जो कृषि उत्पादन को बढ़ाने की दिशा में थी। कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए नई–नई तकनीकों का विकास और उपयोग करने के लिए देश में कृषि अनुसंधान संस्थानों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। इन प्रयासों से 25 वर्षों के भीतर हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में, विशेषकर चावल–गेहूं के उत्पादन में लगभग आत्मनिर्भर हो गया। समय के साथ–साथ जैसे–जैसे फसलों का उत्पादन बढ़ा वैसे–वैसे कृषि में और समस्याएं भी आनी शुरू हुई। यह माना जाने लगा कि फसलों की कम पैदावार होने का एक मुख्य कारण खरपतवार भी है – उनकी रोकथाम हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सन् 1989 में जबलपुर में इस स्थान पर राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान अनुसंधान केन्द्र की स्थापना हेतु नींव रखी।

पिछले 27 वर्षों में हमारे निदेशालय ने फसलीय एवं गैर–फसलीय क्षेत्रों में खरपतवार की रोकथाम हेतु उत्तम तकनीकों का विकास किया है और इन तकनीकों की मांग अब अधिक बढ़ती जा रही है। खरपतवार आधुनिक कृषि में एक प्रमुख चुनौती बनते जा रहे हैं, और कई क्षेत्रों में उन से भयानक स्थिति उत्पन्न हो रही है, जिसके लिए लगातार तकनीकों का विकास और उनमें निरंतर सुधार कार्य करने की आवश्यकता है। आज के इस ऐतिहासिक दिन के अवसर पर हमें इस बात का विश्लेषण करना चाहिए कि पिछले कई वर्षो में और विशेषकर पिछले एक वर्ष में हमने किन ऊंचाईयों को छुआ है, कौन से अनुसंधान के नए आयामों को स्थापित किया है।

मैं पिछले एक वर्ष की कुछ मुख्य उपलब्धियों पर प्रकाश डालना चाहूंगा –

1. पिछले वर्ष 2015–16 में कम वर्षा होने के बावजूद भी हमारे प्रक्षेत्र प्रयोग सुचारू ढंग से चलाए गए और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। हमने खरीफ और रबी में संरक्षित कृषि प्रणाली को अपनाया। लेकिन इस वर्ष जायद के मौसम में भी शत–प्रतिशत क्षेत्र मे फसलों को लगाया गया और इस तरह से हमने

अपने पूरे प्रक्षेत्र पर एक वर्ष में 3 फसलों को लगाया। हमने अपने पूरे अनुसंधान प्रक्षेत्र में एक वर्ष में 3 फसलों को उगाने का रिकॉर्ड बनाया और 300 प्रतिशत की फसल सघनता प्राप्त की। इतना ही नहीं यह सघनता संरक्षित खेती पर आधारित नियमों के आधार पर हासिल की। मैं यह मानता हूं कि यह एक ऐसी उपलब्धि है जिस पर निदेशालय से जुड़े सभी लोगों को गर्व होना चाहिए। यह कहने में कोई संदेह नहीं कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 100 से अधिक संस्थानों मे, 60 से अधिक कृषि विश्वविद्यालयों में – हमारे निदेशालय का अनुसंधान प्रक्षेत्र ही ऐसा है जो पूर्णतया संरक्षित खेती के सिद्धांतों पर आधारित है और 300 प्रतिशत फसल सघनता वाला क्षेत्र है। इस तरह हमने दूसरों के लिए यह एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मुझे याद है जब मैं 2012 में इस निदेशालय मे आया था तब आज की तारीख तक भी धान की रोपाई का कार्य पूरा नहीं होता था, जो कि 20–25 अगस्त तक चलता था, और फिर भी कई क्षेत्र अधूरे रह जाते थे। लेकिन अभी तो हम जून के आखिर में बोनी करके इसे पूरा करने में सफल रहे हैं। मैं अपने सभी वैज्ञानिकों व अन्य अधिकारियों से यह अनुरोध करता हूं कि इस उपलब्धि का व्यापक प्रचार–प्रसार मध्यप्रदेश में ही नहीं करें, बल्कि बाहर भी जहां जायें वहां पर भी इस बारे में बताएं।

2. अक्टूबर, 2015 में हमने 25वीं ऐशियन–पैसिफिक खरपतवार विज्ञान सोसायटी का सम्मेलन, हैदराबाद में आयोजित किया जो बहुत ही सफल रहा। इसकी काफी सराहना की गई और हमने भारत के खरपतवार विज्ञान को विश्व–पटल पर रख कर एक पहचान बनाई।

3. इसके बाद अखिल भारतीय खरपतवार समन्वित अनुसंधान परियोजना की क्रमशः 22वीं और 23वीं समीक्षा बैठक हैदराबाद और जलगांव में की गई, और विशेषकर जो बैठक अप्रैल, 2016 में जलगांव में की गई वह हम सबके लिए एक अनोखा अनुभव थी।

4. पहली बार निदेशालय द्वारा 'विश्व मृदा दिवस' 5 दिसम्बर, 2016 को मनाया गया और 250 से अधिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों मे बांटे गए।

5. 'मेरा गांव मेरा गौरव' कार्यक्रम के अंतर्गत मध्यप्रदेश के 4 जिलों नरसिंहपुर, कटनी, मण्डला और सिवनी में 20 गांवो का चयन किया गया और वहां पर भी खरपतवार एवं संरक्षित खेती पर आधारित तकनीकों का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।

6. 'जय किसान जय विज्ञान' कार्यक्रम 23–30 दिसम्बर, 2016 तक मनाया गया और 30 दिसम्बर, 2015 को प्रगतिशील किसानों एवं कृषि अधिकारियों की बैठक भी आयोजित की गई।

7. 2012 से लगातार हम अपने निदेशालय में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 'खरपतवार अनुसंधान पर नए आयाम' विषय पर चला रहे है। इस तरह के 4 कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं और पांचवा कार्यक्रम भी नवम्बर, 2016 में प्रस्तावित है।

8. इसके अलावा संरक्षित कृषि में खरपतवार प्रबंधन विषय पर भी एक मॉडल प्रशिक्षण कार्यशाला (Model Training Workshop) का आयोजन किया गया।

9. एक कार्यक्रम जो हम 2 वर्षों से नहीं मना रहे थे, वह था गाजरघास जागरूकता सप्ताह। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुरोध पर हम यह कार्यक्रम पुनः प्रारंभ कर रहे हैं। 16 अगस्त, 2016 से लेकर 22 अगस्त, 2016 तक यह कार्यक्रम पूरे राष्ट्र मे मनाया जाएगा। इस संदर्भ में हमें यह प्रसन्नता है कि इस कार्यक्रम के तहत पंजाब प्रदेश का एक गांव 'मन्सूरां' पूरी तरह से गाजरघास मुक्त हो गया है, जो हम सभी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पिछले वर्ष में जहां हमें अपनी उपलब्धियों पर खुशी है और गर्व का अनुभव होना चाहिए वहां कुछ ऐसे भी बिन्दु हैं जिसमें आशा के अनुरूप प्रगति नहीं हुई है जो एक चिंता का विषय है। मैं इस मौके पर उनका उल्लेख नहीं करना चाहता लेकिन यह अपेक्षा करता हूं कि, जो कार्य पिछले 3–4 वर्षों से लम्बित हैं वह अब समयबद्ध तरीके से पूरे किए जाएंगे। हमने उन्हें पूर्ण करने की एक रूपरेखा भी तैयार की है और यह निश्चय

किया है कि 31 दिसम्बर, 2016 से पहले यह सब कार्य पूरे कर लिए जाएंगे। जब हम 26 जनवरी, 2017 को यहां गणतंत्र दिवस मनाने के लिए एकत्रित होंगे तब उन कार्यों का विशेष उल्लेख किया जाएगा।

मैं यह चाहता हूं कि निदेशालय के सभी कर्मचारी चाहे वैज्ञानिक, तकनीक, प्रशासनिक अथवा सहाई वर्ग ही क्यों न हो, उन्हें नियमानुसार प्राप्तियां/पदोन्नतियां निर्धारित अवधि में मिलनी चाहिए। हमारी कोशिश रहेगी कि आने वाले 1–2 महीनों में सभी प्रकरण निपटा लिए जाएं। आपको पता है 12वीं पंचवर्षीय योजना 31 मार्च, 2017 को समाप्त हो रही है और मेरा निदेशक के रूप में भी पंचवर्षीय कार्यकाल 12 मार्च 2017 को समपन्न हो जायेगा, अतः हमारी पूरी कोशिश होनी चाहिए कि इस पंचवर्षीय योजनाओं में से कोई भी कार्य ऐसा न हो जो अपूर्ण रह जाये और आगे फिर अगली योजनाओं में इसे सम्मलित करने का मौका न मिले। हम आने वाले 6 महीनों में कोई नई शुरूआत नहीं करेंगे बल्कि जो कार्य लम्बित हैं उन्हे ही पूर्ण करने का प्रयास करेंगे।

एक दूसरी कमी हमारे निदेशालय में यह है कि यहां पर वैज्ञानिकों की संख्या लगातार घटती जा रही है। इस महीने के आखिर में हम 12 वैज्ञानिक ही यहां रह जाएंगे, जो निर्धारित संख्या का लगभग 40 प्रतिशत ही है। इस विषय में हम लगातार परिषद को सूचित कर रहे हैं और आशा है कि आने वाले दिनों में नए वैज्ञानिक भी यहां नियुक्त किये जायेंगे।

सभी लोगों को चाहे वो किसी भी वर्ग के हों उन्हें अपने काम के द्वारा अपनी एक पहचान बनानी चाहिए। निदेशालय का अनुसंधान हमारी इस चार–दीवारी के बाहर भी जाना चाहिए। निदेशालय के वैज्ञानिकों का कार्य ही उनकी पहचान होनी चाहिए। मेरा यह मानना है कि हमारा निदेशालय हर तरह की सुविधाओं से सुसज्जित है यहां उच्च कोटि का अनुसंधान किया जा सकता है। **दरअसल कोई कार्य करने के लिए सुविधाओं की कम – इच्छाशक्ति की आवश्यकता अधिक होती है।**

यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य और गर्व की बात है कि मुझे इस राष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान संस्थान में लगातार पांचवी बार राष्ट्रीय ध्वज फहराने का और आपको सम्बोधित करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने पिछले साढ़े चार वर्षो में अपनी योग्यता एवं तन–मन से निदेशालय को आगे ले जाने की पूरी–पूरी कोशिश की है। इसमें मैं कहां तक सफल रहा वह आप सबके लिए और आने वाले लोगों के लिए एक आंकलन एवं चर्चा का विषय जरूर रहेगा।

अंत में मैं फिर आप सभी को 70वें स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए यह आशा करता हूं कि हम सब इस निदेशालय को और ऊंचाईयों पर ले जाएंगे और देश के उत्थान में अपनी पूरी–पूरी भागीदारी निभायेंगे।

जय हिन्द।